

बौद्ध धर्म की विभिन्न शाखाओं का वर्णन —

भूमिका :

गौतम बुद्ध के निर्वाण (लगभग 483 ई.पू.) के बाद उनके अनुयायियों में सिद्धांतों की व्याख्या और आचरण को लेकर मतभेद उत्पन्न हुए। परिणामस्वरूप बौद्ध संघ में विभाजन हुआ और कालांतर में बौद्ध धर्म की अनेक शाखाएँ विकसित हुईं। इन शाखाओं ने बुद्ध के मूल संदेश को अपने-अपने ढंग से व्याख्यायित किया और विविध रूपों में एशिया भर में फैलाया।

१. हीनयान (Theravāda या Sthaviravāda)

अर्थ: “हीनयान” का अर्थ है “छोटा या संकीर्ण वाहन”, किंतु इसके अनुयायी स्वयं को “थेरवाद” अर्थात् “बुजुर्गों का मार्ग” कहते हैं।

मुख्य विचार:

व्यक्तिगत मोक्ष (निर्वाण) पर बल।

बुद्ध को महान शिक्षक (Teacher) के रूप में माना गया, ईश्वर या देवता नहीं।

केवल भिक्षु (संन्यासी) जीवन को ही मोक्ष के योग्य माना गया।

ग्रंथ: पाली त्रिपिटक।

मुख्य क्षेत्र: श्रीलंका, म्यांमार, थाईलैंड, लाओस, कंबोडिया।

२. महायान (Mahayāna)

अर्थ: “महायान” का अर्थ है “महान वाहन”। यह लगभग पहली शताब्दी ई.पू. में विकसित हुआ।

मुख्य विचार:

सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय — सबके लिए मोक्ष की कामना।

बोधिसत्व आदर्श का प्रतिपादन, जो स्वयं मोक्ष प्राप्त करने के बाद भी दूसरों के कल्याण के लिए संसार में रहते हैं।

बुद्ध को ईश्वरीय रूप (Divine Being) के रूप में पूजनीय माना गया।

मुख्य ग्रंथ: प्रज्ञापारमिता सूत्र, सद्धर्मपुंडरीक सूत्र।

मुख्य क्षेत्र: चीन, कोरिया, जापान, वियतनाम।

३. वज्रयान (Vajrayāna)

अर्थ: “वज्रयान” का अर्थ है “वज्र जैसा अटूट या शक्तिशाली मार्ग”।

काल: लगभग 7वीं शताब्दी ईस्वी के आसपास उद्भव।

मुख्य विचार:

महायान के सिद्धांतों पर आधारित, परंतु इसमें तांत्रिक एवं गूढ़ साधनाएँ शामिल हैं।

मन्त्र, ध्यान, मुद्रा, एवं मंडल का प्रयोग।

गुरु (लामा) को अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान।

मुख्य क्षेत्र: तिब्बत, मंगोलिया, नेपाल, भूटान।

४. अन्य उपशाखाएँ

ज़ेन (Zen Buddhism): जापान में विकसित शाखा; ध्यान (ध्यान = ज़ेन) को मोक्ष का मुख्य साधन मानती है।

शुद्धभूमि संप्रदाय (Pure Land): अमिताभ बुद्ध की भक्ति के माध्यम से मोक्ष प्राप्ति पर बल।

च'आन (Ch'an): चीन में ध्यान पर आधारित शाखा, जो बाद में जापान में ज़ेन के रूप में विकसित हुई।

निष्कर्ष :

बौद्ध धर्म की ये विभिन्न शाखाएँ बुद्ध के मूल उपदेश — करुणा, मध्यम मार्ग और अहिंसा — को अपने-अपने सांस्कृतिक और दार्शनिक संदर्भों में व्याख्यायित करती हैं। जहाँ थेरवाद यथार्थवादी और अनुशासनप्रिय है, वहीं महायान और वज्रयान भक्ति, तांत्रिकता और लोककल्याण की भावना से ओतप्रोत हैं। यही विविधता बौद्ध धर्म को विश्व का एक व्यापक और बहुआयामी धर्म बनाती है।